डॉ. संगीता राय
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

ध्वनियों का वर्गीकरण :→

प्रयत्न :→

"यत्नो द्विधा। अभ्यान्तरो बाह्यश्च। किसी भी ध्वनि के उच्चारण में मुखविव से लेकर कण्ठ पर्यन्त जो किया जाता है, उसे प्रयत्न कहा जाता है। यह दो प्रकार का होता है - आभ्यान्तर एवं बाह्य।

1) आभ्यन्तर → पञ्चधा 'स्पृष्टेषत्स्पृष्टेषद्विवृतविवृत-संवृतभेदात्।' आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्-विवृत, विवृत तथा संवृत भेद से 5 प्रकार का होता है—

1) स्पृष्ट - स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम् अर्थात् (कादयो मावसाना-स्पर्शाः) क् से लेकर म् अक्षर पर्यन्त जो ध्वनियाँ हैं उनको स्पृष्ट या स्पर्श कहते हैं।

2) ईषत्स्पृष्ट - 'ईषत्स्पृष्टमन्तस्थानाम्' अर्थात् य्, व्, र् ल् का प्रयत्न ईषत्स्पृष्ट है।

3) ईषद्विवृत - 'ईषद्विवृतमूष्माणाम्' अर्थात् श्, ष्, स् और ह् ऊष्म ध्वनियाँ हैं तथा इनका प्रयत्न ईषद्विवृत है।

4) विवृत - 'विवृतं स्वराणाम्' - सभी स्वरों का प्रयत्न विवृत है।

5) संवृत - 'ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्' अर्थात् ह्रस्व 'अ' का प्रयत्न संवृत है।

11) बाह्य प्रयत्न :— बाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा ।
विवार: संवार: श्वासो नादो घोषोऽघोषोऽल्पप्राणो महाप्राण उदात्तोऽनुदात्त: स्वरितश्चेति । अर्थात् बाह्य प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों के ग्यारह भेद होते हैं— 1) विवार (2) संवार (3) श्वास (4) नाद (5) अघोष (6) घोष (7) अल्पप्राण (8) महाप्राण (9) उदात्त (10) अनुदात्त (11) स्वरित ।

1) 'खरो विवारा: श्वासा अघोषाश्च' (विवार, श्वास, अघोष— ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्

2) हश: संवारा नादा घोषाश्च (संवार, नाद, घोष — ह् य् व् र् ल्, ञ् म्, ङ् ण् न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्

(3) वर्गाणां प्रथम तृतीय, पञ्चमा यणश्चाल्प्राणा:
(क् ग् ङ्, च् ज् ञ्, ट् ड् ण्, त् द् न्, प्, ब् म्)

(4) वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राण: (महाप्राण — ख् घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श्, ष्, स्, ह्)

(5) उच्चैरुदात्त: (उदात्त — जो ध्वनि उच्च स्वर से बोली जाती है, वे उदात्त ध्वनि है ।

(6) नीचैरनुदात्त: (अनुदात्त - वे ध्वनियाँ हैं जो नीचे स्वर में बोली जाती है)

(7) समाहार स्वरित: (आरोही एवं अवरोही के मध्य 'सम' स्वर को स्वरित कहते हैं ।

स्वरों का वर्गीकरण :—

आभ्यन्तर प्रयत्न के अनुसार स्वरों के चार भेद होते हैं। संवृत, अर्द्धसंवृत, अर्द्धविवृत, और विवृत - अग्र, मध्य एवं पश्च।

⇒ संवृत-स्वर ⇒ मुखद्वार के संकुचित होने पर जो स्वर निकलते हैं उन्हें संवृत स्वर कहते हैं। जैसे :- इ, ई, तथा उ, ऊ

⇒ अर्द्धसंवृत स्वर – जब मुखद्वार अर्धसंकुचित होता है, तब उस स्वर को अर्द्धस्वर कहते हैं, यथा – ए तथा ओ।

⇒ अर्द्ध - विवृत स्वर – जब मुखविवर आधा खुला रहता है तब उसे अर्द्धविवृत स्वर कहा जाता है, यथा - ऐ तथा औ।

⇒ विवृत स्वर – जब मुख विवर पूर्ण रूपेण खुला रहता है उसे विवृत स्वर कहा जाता है, यथा - अ आ।

व्यंजनों का वर्गीकरण :—

स्थान एवं प्रयत्न भेद से व्यंजनों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है। इसमें प्रथम स्थान भेद से व्यंजन ध्वनियों के आठ प्रकार है तथा प्रयत्न के आधार पर बाह्य प्रयत्न भेद से निवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण तथा महाप्राण है, जबकि आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर आठ (8) है जो कि निम्न है :—

1) स्पर्श व्यंजन :— जब मुखद्वार को बन्द कर खोलते है, परिणामतः तथा उच्चारण स्थानों का स्पर्श मात्र करती है, उस समय मुख से निकलने वाली ध्वनियाँ कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग स्पर्श व्यंजन ध्वनियाँ है।

2) स्पर्श संघर्षी :— जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्पर्श के साथ-2 निःश्वास के निकलने में हल्का घर्षण होता है

उन्हें स्पर्श - संघर्षी व्यंजन कहते हैं, यथा च, छ, ज, झ स्पर्श - संघर्षी व्यंजन ध्वनियाँ हैं।

3) संघर्षी - मुखद्वार के अत्यधिक संकुचित हो जाने पर हवा घर्षण करती हुई और चीत्कार की ध्वनि के साथ निकलती है, उन ध्वनियों को संघर्षी ध्वनि कहते हैं जैसे - फ, ब, स, ज, ख, ग, ह

4) अर्धस्वर :— संस्कृत में अर्धस्वरों को अंतस्थ कहते हैं। जिन वर्णों का उच्चारण में मुखविवर व्यंजनों के तुल्य न पूर्णतया बन्द होता है और न स्वरों के तुल्य पूरा खुला रहता है। यथा - य, व

5) नासिक्य - जिनके उच्चारण में मुख के साथ ही नासिका या नासाविवर की सहायता ली जाती है यथा - वर्णों के पञ्चम वर्ण - ङ, ञ, ण, न, म।